Shodh Sangam Patrika
ISSN: 3049-0707 Volume 2 | Issue 1 | (Jan – Mar 2025)

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का संक्षिप्त अध्ययन

श्री हेमेन्द्र कुमार [1], डॉ. बीरेंद्र कुमार शर्मा [2]

[1] शोधार्थी एवं असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, इंस्टिट्यूट ऑफ़ ओरिएण्टल फिलॉसफी, वृन्दावन, मथुरा

[2] शोध निर्देशक एवं विभागाध्यक्ष- हिन्दी, इंस्टिट्यूट ऑफ़ ओरिएण्टल फिलॉसफी, वृन्दावन, मथुरा

सार :

समकालीन हिन्दी उपन्यासकारों में मैत्रेयी पुष्पा का नाम अग्रगण्य रहा है। इन्होनें अपनी रचनाओं के द्वारा हिन्दी साहित्य जगत में अपनी अलग पहचान बनाई है। इनके उपन्यासों में नारीवाद जीवन के स्वाभाविक प्रवाह के रूप में प्रस्फुटित हुआ है। नारी के दु:ख-दर्द, संताप, पीड़ा, संवेदना, नारी शोषण, रूढ़ व्यवस्था की दास्तान अपने उपन्यासों में व्यक्त की है। इनके उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय निम्नांकित है।

बीज शब्द : पुनर्विवाह, दास्तान, विजन, हक, सराहना, षड़यंत्र

भूमिका : मैत्रेयी पुष्पा के सभी उपन्यासों के केंद्र में स्त्री ही है। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्त्री की चेतना को जगाने का प्रयास किया है। 'विजन' उपन्यास को छोड़दिया जाए तो उनके सभी उपन्यास आंचलिक है। किंतु मैत्रेयी पुष्पा इन्हें आंचलिक उपन्यासों की श्रेणी में नहीं मानती। उनका मानना है कि यह समस्या एक अंचल विशेष की नहीं है, समग्र स्त्री जाति की समस्या है। मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य की सराहना करते हुए राकेश दीक्षित अपने विचारों को व्यक्त करते हैं-

"स्वतंत्रता के बाद, रांघेय राघव, फणीश्वर नाथ रेणु के साथ मैत्रेयी तीसरा नाम है जो कथा साहित्य में धूमकेतु की तरह आया है। [1]

उपन्यास

1. **बेतवा बहती रही** (1994)

'बेतवा बहती रही' उपन्यास 1994 ईस्वी में प्रकाशित हुआ था। विंध्याचल की पहाड़ियों में रहने वाले पिछड़ी जाति के लोगों की कथा है। इसमें विधवा युवती की व्यथा, वेदना तथा पुनर्विवाह की समस्या को व्यक्त किया गया है। उपन्यास की नायिका उर्वशी सुंदर है जो परिवार के लोगों द्वारा किए गए षड्यंत्रों का शिकार होती रहती है। उसकी सुंदरता उसके लिए अभिशाप बन जाती है। उसका भाई उसे बेचना चाहता है परंतु नाना उसे बचा कर उसका ब्याह करा देते हैं। विवाह के पश्चात पति की मृत्यु हो जाती है तो भाई को बड़ी खुशी होती है। वह उर्वशी को बरजोर सिंह के हाथ बेचता है। बरजोर सिंह की बेटी मीरा, उर्वशी की सहेली है। पिता की आयु के वृद्ध व्यक्ति से विधवा उर्वशी का पुनर्विवाह होता है। उपन्यास में उर्वशी द्वारा नारी शोषण के कटु सत्य को उजागर किया गया है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी शोषण के विभिन्न रूप है। उपन्यास में सती प्रथा भी स्त्री शोषण का एक भयानक रूप है। अपने पात्रों के माध्यम से इस कठोर व्यवस्था में मैत्रेयी परिवर्तन चाहती हैं। उपन्यास में सर्वदमन अपनी पत्नी उर्वशी को समझाता है- "कभी मैं न रहूँ उर्वशी तो तुम रहना। देख रही हो सामने सती का चौरा- ऐसी सती मत हो जाना- यह कायर थी। तुम कायर नहीं हो उर्वशी-तुम मेरी पत्नी हो सर्वदमन की अर्धांगिनी साहसी, निर्भीक। "[2]

2. इदन्नमम (1994)

मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' उपन्यास में विस्थापित मजदूरों की समस्या को उठाया है। इस उपन्यास में मंदाकिनी को एक संघर्षरत लडकी के रूप में दिखाया गया है। जो महिलाओं के लिए परिवार और समाज के द्वारा बनाई गई बेड़ियों को तोडती है। लेखिका ने मंदाकिनी के संघर्ष के माध्यम से समाज की कठोर वास्तविकताओं को प्रकट किया है। मंदा का चरित्र निर्भीक, साहसी, महत्वाकांक्षी और एक अद्भुत व्यक्तित्व का परिचय है। उपन्यास में रामायण पर कई प्रकार के प्रश्न उठाए गए हैं। महाभारत की नियोग पद्धति पर भी प्रश्न खड़ा किया गया है। राजनीति की समस्या को भी उजागर किया है। तीन नारियों द्वारा नारी समस्या एवं नारी की मानसिकता का चित्रण उपन्यास में किया गया है। मंदा की हिम्मत देखकर राजा साहेब भी हैरान है – "कितनी जहरीली हंसी है लड़की की ! यह हैरत की बात है लोग गाँव के नेता बनते जा रहे हैं। पुरुष तो पुरुष इस लड़की में हिम्मत बहुत है। इतनी कम उम्र में भी कितनी बड़ी ऊँची बातें करती है। "[3]

3. चाक (1997)

'चाक' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा फिर नारीवाद की ओर लौट आयी। इस उपन्यास की नायिका सारंग आजादी का साक्षात रूप है। जाटों में पढ़ी-लिखी लड़की। डोरिया ने उससे बलात्कार की कोशिश की परंतु सफल नहीं हो सका। उसका बदला लेने के लिए वह कैलासी सिंह पहलवान को बुलाती है परंतु उसे पता चला कि उसमें पौरुष की कमी है तो उसने कलावती चाची द्वारा मालिश करवा कर उसमें पौरुष भर दिया और डोरिया को हरा दिया। द्रोपदी के समान वह बदला लेती है।

श्रीधर जैसा मास्टर गांव में आता है। वह उससे प्यार कर बैठती है। करवा चौथ के दिन भी उसकी आंखों के सामने पति का चेहरा नहीं श्रीधर का चेहरा आता है। प्रस्तुत उपन्यास में पुरुष सत्तात्मक विचारधारा को ललकारा है।

4. झूला नट (1999)

झूला नट उपन्यास सन 1999 में प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत उपन्यास में परित्यक्ता स्त्री की सन्निहित शक्ति का दिग्दर्शन कराया गया है। झूला नट की नायिका शीलो में जीने का संकल्प और श्रम की ताकत है। बचपन में रिश्ता तय होता जाता है किंतु सुमेर उसे नहीं ले जाता वह शहर में दूसरा विवाह कर लेता है। पति को वश में करने के सारे उपाय वह करती है। अंत में सास उस पर दया कर उसे 5 साल छोटे देवर को सौंपती है। पति ने रखैल रख ली तो किसी ने कुछ नहीं कहा फिर उसने रखेला रख लिया तो क्यों भला बुरा कहा जाता है ? बालकिशन उसका रखेला है। यह उपन्यास छोटा होकर भी अप्रतिम है। डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी के शब्दों में- "इसे देखकर एक बार लगता है कि एक बृहत औपन्यासिक चेतना का यह फिलर आइटम है। "[4]

5. अल्मा कबूतरी (2000)

अल्मा कबूतरी उपन्यास का प्रकाशन 2000 ई. में हुआ था। अल्मा कबूतरी के माध्यम से कबूतरा जनजाति के ऐतिहासिक तथा समाजशास्त्रीय विश्लेषण का प्रयास किया गया है। यह उपन्यास दो नारियों की धुरी पर घूमता है। एक है 'कदमबाई' और दूसरी है 'अल्मा'। बुंदेलखंड की विलुप्त होती कबूतरा जाति का का प्रतिनिधित्व करती है कदमबाई।

उपन्यास के शुरुआत में ऐसी विकट स्थिति है कि महिलाओं के पास पहनने को पर्याप्त वस्त्र तक नहीं है जिससे कि उनका पूरा शरीर ढक जाए। ऊपर से पुलिसिया अत्याचार, पुलिस आती है और कबूतरा पुरुषों के अपराधों का सहारा लेकर उनकी स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार करती है। एक दृश्य में कदमबाई के साथ यही होता है "सिपाही के हाथ पड़ गई जो घाघरा फाड़ने लगा। ओढ़नी चीर-चीर कर दी। नंगी होती हुई औरत को बेटी की जिंदगी और मौत भी नहीं सूझती। "[5]

उपन्यास की कथा अल्मा के इर्द-गिर्द घूमती है। अल्मा और राणा के बीच प्रेम संबंधों की कथा इस उपन्यास में महत्वपूर्ण है। कबूतरा जाति के अपराधों को उजागर करते हुए उसका समाजशास्त्रीय विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। स्वतंत्र भारत में इन जनजातियों से अपराधी शब्द भले ही हटा लिया गया हो किन्तु समाज के व्यवहारिक जीवन में आज भी ये अपमानित है। आजादी के बाद भी यदि देश में इस प्रकार की स्थिति है तो इसका जिम्मेदार कौन है ? यह एक ज्वलंत प्रश्न है।

6. अगनपाखी (2001)

अगनपाखी सन 2001 में प्रकाशित उपन्यास है। इसमें सामंती परिवारों के माध्यम से सती प्रथा पर प्रहार किया गया है। इस उपन्यास की नायिका 'भुवन' कम पढ़ी लिखी है किंतु परंपरा और मान्यताओं की दिशा बदलने वाली है। भुवन की शादी पागल के साथ होती है। वह इंद्रियविहीन व्यक्ति है। नियोग पद्धति से पुरोहित द्वारा बलात्कार का प्रयास किया जाता है।

पति की मौत के पश्चात सती होने की जबरदस्ती की जाती है किंतु वह भाग निकलते हैं बरसों बाद अदालत में अपने जेठ पर जायदाद के लिए मुकदमा दायर करती है।

"मैं भुवन मोहिनी पत्नी स्वर्गीय विजय सिंह वल्द स्व. दुरजन सिंह निवासी ग्राम विराटा, जिला झांसी, यह दावा करती हूं कि मैं अपने पति के हिस्से की चल-अचल सम्पत्ति की हकदार हूं। मुझे इत्तला मिली है कि मेरे पति के साथ मुझे भी मृतक दिखाया गया है और मेरे जेठ कुवंर अजय सिंह ने अपने अकेले का हक बरकरार रखा है। क्योंकि स्व. विजय सिंह की कोई संतान नहीं। कचहरी से अर्ज है कि अपने पति की जायदाद का हक मुझे सौंपा जाय। मैं कुंवर अजय सिंह की हकदारी पर सख्त एतराज करती हूं। बकलम खुद भुवन मोहनी। "[6]

7. विजन (2002)

'विजन' उपन्यास देश-विदेश की पितृसत्तात्मक व्यवस्था को उजागर करता है। विजन स्त्री शक्ति के नए आयाम खोजने और खोलने का साहसिक प्रयोग है। मैत्रेयी पुष्पा द्वारा एक नई भूमि पर उपन्यास का सृजन किया गया है। इसमें उन्होंने नेत्र चिकित्सा के एक विशेष क्षेत्र को चुना है। इस उपन्यास की प्रमख नायिका डॉ. नेहा है। नेहा गरीब घर की डॉक्टर लड़की है। पैसे कमाने के लिए नेहा का पति लोगों की आंखें फोड़ता है। "व्यक्ति अर्थ कमाने में इतना अनैतिक हो गया है कि उसकी मानवीय संवेदना ही जैसे नष्ट हो गई है। " [7] इस बात का पता जब नेहा को चलता है तो वह इसका विरोध करती है। तब उसे रिसेप्शनिस्ट की जगह पर बिठाया जाता है। पेशेंट की मृत्यु होने पर पति के स्थान पर उसे केस हैंडल करने के लिए जब कहा जाता है। तब वह इनकार कर देती है। डॉक्टर बनने पर भी अपेक्षा की जाती है कि वह चूल्हा-चौका संभाले यह कहाँ का न्याय है ? विज्ञान-तकनीक और मानवीय भावना की रोजमर्रा द्वंद्वात्मकता के बीच 'विजन' सिर्फ दृष्टि की नहीं दृष्टिकोण की भी तलाश है।

8. कही ईश्वरी फाग (2004)

'कही ईसुरी फाग' उपन्यास सन 2004 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास के द्वारा मैत्रेयी पुष्पा ने लोक संस्कृति में गहरी पैठकर ईसुरी के जीवन रहस्य की खोज की है। यह उपन्यास ईसुरी के फागों की खोज पर आधारित है। इसकी नायिका रजुआ को किसी ने नहीं देखा। फागों में केवल उसका वर्णन किया गया है। रजऊ प्रताप की पत्नी थी। वह अपने पति से ऐसे डरती जैसे वह कोई यमराज हो। जब-जब वह अपनी पत्नी का नाम फागों में सुनता वह उसकी पिटाई करता। सास ने बेटे से कहा भी था कि यदि उसे बैर है तो वह फाग लिखने वाली की मुंडी काटे न कि रजऊ को पीटे। पति के लड़ाई पर जाने के बाद इंदर राजाओं के पीछे पड़ जाता है। रजऊ उसको सबक सिखाती है। उसे मारने की कोशिश होती है लेकिन सफलता नहीं मिलती। वह रानी लक्ष्मीबाई के साथ अंग्रेजों से लड़ते-लड़ते शहीद हो जाती है। 'कही ईसुरी फाग' में मैत्रेयी पुष्पा का रचनात्मक विवेक अपनी रचना-दृष्टि अथवा रचना-प्रयोजन की केन्द्रिकता के प्रति पूरी तरह सजग है। इसी रचनात्मक विवेक से उन्होंने ईसुरी से सम्बंधित लोकाख्यान या मिथ का विश्लेषण और उपयोग किया है। तत्कालीन समाज और समय के संदर्भ में ऐसी संभावनाओं को कथारूप दिया है जो इस उपन्यास को इकहरी जीवन-कथा के बदले भरे-पूरे संसार का विस्तार करती है।

9. त्रिया हठ (2006)

'त्रिया हठ' 2006 में प्रकाशित उपन्यास है। 'त्रिया हठ' उपन्यास मैत्रेयी का प्रथम उपन्यास 'बेतवा बहती रही' का अगला चरण है। जिसमें संघर्षशील उर्वशी के पुत्र देवेश अपनी मां के वास्तविक जीवन की तहकीकात करता है और उर्वशी पति की सम्पत्ति पर गैरों के हक को अपने एवं पुत्र देवेश के नाम करवाने को संघर्षरत् दिखाई पड़ती है। 'बेतवा बहती रही' उपन्यास लिखने के बाद मैत्रेयी कहती है कि मैंने नारी के साथ न्याय नहीं अपराध किया है। इसलिए बेतवा का ही परिवर्तित रूप 'त्रिया हठ' लिखा।

10. गुनाह बेगुनाह

'गुनाह बेगुनाह' एक ऐसा उपन्यास है जो पूर्णतः यथार्थ पर आधारित है। ईला चौधरी नामक महिला पात्र जो कि शादी के मंडप से भाग कर हरियाणा पुलिस में कांस्टेबल बनती है। ट्रेनिंग के दौरान दिखाए गए आदर्शों और थाने की क्रूर वास्तविकता के बीच कई सारी सच्ची घटनाओं के मानवीय पहलुओं का संवेदना के साथ विस्तारपूर्वक विवेचन इस उपन्यास में किया गया है। यह उपन्यास मूलतः स्त्रियों की थाने में स्थिति और स्त्री अपराधियों से थाने में सुलूक पर आधारित है। इसके साथ ही उपन्यास में खाप पंचायत और हरियाणा में स्त्रियों की दयनीय स्थिति पर भी ध्यान आकर्षित करता है। इस उपन्यास में कई सारे दृश्य इतने विचलित करने वाले है कि पाठक का विश्वास पुलिस के व्यवहार से हट जाता है। जिसकी वजह से गरीब और वंचित वर्ग आज भी पुलिस के खौफ और पक्षपातपूर्ण रवैए का सामना कर रहा है।

निष्कर्ष :

मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि उनके स्त्री पात्र विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों से संघर्ष करते दिखाई देते हैं, परंपराओं का विरोध, व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष तथा विद्रोह यह गुण मैत्रेयी में दिखाई देते हैं। पुरुष प्रधान संस्कृति द्वारा पुरुषों को दुर्व्यवहार करने की आजादी तथा नारी पर लगे अनावश्यक प्रतिबंधों का मैत्रेयी पुष्पा विरोध करती हैं। वे अपने उपन्यास साहित्य द्वारा नई चेतना को जगाने का प्रयास करती है। हिंदी उपन्यास साहित्य में मैत्रेयी नई विद्रोह एवं नारी सशक्तिकरण की प्रणेता के रूप में उभरी हैं। अपनी लेखनी के सहारे स्त्री चेतना, अस्मिता को जगाने एवं नई क्षमता को उजागर करने का प्रयास मैत्रेयी पुष्पा ने

किया है। पुराने सड़े-गले रूढ़ विधानों का उच्छेदन तथा उनके स्थान पर स्वस्थ सुलझे जीवन मूल्यों का आरोपण हमें मैत्रेयी की रचनाओं में दिखाई पड़ता है। राजेंद्र यादव के शब्दों में "एक तरह से मैत्रेयी की संपूर्ण कथा यात्रा स्त्री सशक्तिकरण की कहानी है। "[8]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. सं. दीपा दीक्षित, चाणक्य विचार मासिक पत्रिका, मई-2009 पृष्ठ संख्या - 8
2. पुष्पा, मैत्रेयी 'बेतवा बहती रही' राजमकल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण –(1993) पृष्ठ – 42
3. पुष्पा मैत्रेयी, 'इदन्नमम', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण (2012),पृ.-354
4. त्रिपाठी, सत्यदेव (जुलाई-सितम्बर, 2001), दस्तावेज -92, पृष्ठ संख्या- 43
5. पुष्पा मैत्रेयी, अल्मा कबूतरी, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, संस्करण (2016), पृ.45
6. पुष्पा मैत्रेयी, अगनपाखी राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, संस्करण –(2001) - पृष्ठ 07
7. डॉ. शर्मा मोहिनी, 'हिन्दी उपन्यास और जीवन मूल्य', साहित्यागार पब्लिकेशन जयपुर, पृष्ठ संख्या- 161
8. सं. दीपा दीक्षित, चाणक्य विचार मासिक पत्रिका, मई-2009 पृष्ठ संख्या – 11